International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 10-08-2021, Accepted: 25-08-2021, Published: 10-09-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 15-20

रिपोर्ताज परम्परा की तीन आरम्भिक रचनाओं की खोज

ऋषिकेश सिंह

हिंदी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली, भारत

सारांश

शोध' विकासवादी सिद्धांत के अनुरूप एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। जिसके परिणामस्वरुप ना केवल नए विचारों एवं वस्तुओं की खोज संभव होती है बल्कि पूर्व स्थापित सिद्धांत, तथ्य, तत्व एवं वस्तु आदि की पुनर्व्याख्या तथा नवीन संस्करण का संपादन भी किया जाता है जिससे एक तरफ मानव जीवन में सुगमता एवं गुणवत्ता सुनिश्चित होती है तो वहीं दूसरी तरफ स्थापित परंपरा पर पुनर्विचार से उसमें उपस्थित रूढ़ियों, मान्यताओं आदि का परिष्करण हो जाता है जिससे उस परंपरा में नए तथ्यों, विचारों एवं प्रमाणों से न केवल प्रमाणिकता एवं क्षेत्र का विस्तार होता है बल्कि नए आयामों का समाहिकरण भी होता है 'डॉ. एस. एन.' गणेशन के शब्दों में कहें तो" अनुसंधान की परिभाषा से ही स्पष्ट है कि विषय ऐसा होना चाहिए जिसमें नए सत्यों के उद्घाटन के लिए या पूर्ववत ज्ञात सत्यों के विस्तार सुधार के लिए गुंजाइश हो"।1 इस प्रकार देखा जा सकता है एस.एन. गणेशन भी शोध के आधार के रूप में दो प्रकारों को उद्घाटित करते हैं - (1) नई शक्तियों का उद्घाटन (2) दिए गए ज्ञात सत्य में विस्तार एवं सुधार। उदाहरण के तौर पर शुक्ल जी द्वारा साहित्येतिहास लेखन में नामकरण का उप-विभाजन नए सत्य का उद्घाटन है तो वहीं द्विवेदीजी जी द्वारा भक्तिकाल के उद्भव के संबंध में पूर्व स्थापित मान्यताओं की पुनर्व्याख्या कर उसे भारतीय चिंतन धारा का स्वाभाविक विकास के रूप में व्याख्यायित करना पूर्व ज्ञात सत्यों का विस्तार एवं सुधार है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में दूसरे आधार के अंतर्गत खोज के दौरान अथवा सामग्री संकलन चरण के अंतर्गत प्राप्त रिपोर्ताज शैली की तीन आरंभिक एवं नई रचनाओं (नई इस अर्थ में कि इनका वर्णन अभी तक रिपोर्ताज परंपरा के विकास में नहीं किया गया है।) की विधागत लक्षणों के आधार पर पड़ताल किया जाएगा और साथ ही प्रथम रिपोर्ताज के विवाद की पुनर्व्याख्या भी की जाएगी।

मूल शब्द: विकासवादी, परिणामस्वरुप, उद्घाटन, साहित्येतिहास

प्रस्तावना

विधागत लक्षणों की पड़ताल से पूर्व इन रचनाओं का परिचय एवं विवरण आवश्यक है। इसमें पहली रचना का शीर्षक 'निर्धनता' दूसरी रचना 'गोमती' तथा तीसरी रचना 'सात जनों में दो सेर धान' है। यह तीनों रचनाएं एक साथ अलग-अलग नाम से "चांद के अछूत अंक" में (वर्ष-5 खंड- 2, संख्या-1) मई 1927 प्रकाशित हुई है। इसके लेखक "माधवानुज" है जिन्होंने इस रचना को तत्कालीन समय में गांधी जी द्वारा चलाए जा रहे दलितोद्धार कार्यक्रम के अंतर्गत रिपोर्टिंग के तौर पर लिखा है। इस पत्रिका से भी पूर्व यह रचना गांधी जी के पत्र नवजीवन में 24 मार्च के अंक में प्रकाशित कर दी गई थी। जैसा किस रचना में उद्धृत है " बारदौली प्रदेश में कालीपरज नाम की एक दलित जाति है। वहां अछूत तथा दलितोद्धार का कार्य बड़े जोरों के साथ हो रहा है। "माधवानुज" नाम के एक सज्जन ने जो शायद इस संबंध में विशेष कार्य कर रहे हैं अपने भ्रमण का एक संक्षिप्त विवरण लिखा है जो धारावाही

रूप में महात्मा गांधी के पत्र नवजीवन में प्रकाशित हो रहा है। 24 मार्च के अंक में जो विवरण प्रकाशित हुआ है वह बड़ा ही रोमांचकारी है।' [2]

उपरोक्त संदर्भ के संबंध में दो बातें विचारणीय है प्रथम कि इसमें रचना को रिपोर्ताज न कहकर 'एक संक्षिप्त विवरण' कहा गया है जो की पूर्ण रुप से "क्षण बोले कण मुस्काए" के प्रथम संस्करण की भूमिका की याद दिलाता है जिसमें 'कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर' ने भी लिखा है- "1925 में जब मैं तुकबंदियों के तंग घेरों से निकलकर गद्य के क्षेत्र में आया..... उन्हीं दिनों बसंत के खेतों पर खूब घूमने के बाद मैंने एक लेख लिखा। पूरी जिम्मेदारी के साथ मैं कह सकता हूं कि गद्य, काव्य, स्केच और रिपोर्ताज के बीज उसमें थे।..... स्पष्ट है कि मेरे मन में ना रिपोर्ताज शब्द था ना उसके फलितार्थ।' [3] अर्थात कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने भी आरंभ में अपनी रिपोर्ताज शैली की रचनाओं को 'एक लेख' के रूप में ही उद्धृत किया है। वहीं दूसरी ओर तथ्य यह है कि इन तीन रचनाओं का प्रकाशन भी धारावाहिक रूप में हुआ है जैसे कि ("तूफानों के बीच") रांगेय राघव के रिपोर्ताजों का विशाल भारत मासिक पत्र में 'अदम्य जीवन' शीर्षक से धारावाहिक रूप में हुआ था, साथ ही रेणु व शिवदानसिंह चौहान के रिपोर्ताज भी धारावाहिक रूप में कई भागों में प्रकाशित हुए। "भारत यायावर" के शब्दों में कहें तो "प्रेमचंद्र के देहावसान के बाद उनके द्वारा प्रारंभ की गई पत्रिका 'हंस' पत्रिका का संपादन बाद में शिवदान सिंह चौहान ने करना आरंभ किया और इसमें उन्होंने दो अतिरिक्त स्तंभ बनाए- "समाचार और विचार" तथा 'अपना देश'। इन स्तम्भों में प्रायः रिपोर्ताज प्रकाशित होते थे। 1943-44 ईसवी में 'विशाल भारत' मासिक में 'रांगेय राघव' के बंगाल के दुर्भिक्ष पर धारावाहिक रूप से रिपोर्ताज छपे जो बाद में 1946 ईस्वी में तूफानों के बीच शीर्षक से पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुए।' [4]

परिचय एवं विवरण के पश्चात सर्वप्रथम इन रचनाओं को विधागत कसौटी पर कसना अनिवार्य है, इस रूप में इन रचनाओं की पड़ताल रिपोर्ताज के तत्वों के आधार पर की जाएगी। अतः सर्व प्रथम रिपोर्ताज एवं उसके तत्वों का विवरण आवश्यक है । जहां तक रिपोर्ताज शब्द की बात है तो यह एक फ्रांसीसी भाषा का शब्द है जिसका उद्भव द्वितीय विश्वयुद्ध के समय माना जाता है। इसके अंतर्गत घटना की रिपोर्टिंग कलात्मक, प्रभावोत्पादक एवं साहित्यिक शैली में की जाती है। "रांगेय राघव के शब्दों में कहें तो" रिपोर्ट सृजनात्मक साहित्य की कोटि में आकर रिपोर्ताज की नई विधा के रुप में अवतरित हुई।' [5]

रिपोर्ताज परिचय के पश्चात रिपोर्ताज तत्वों की पड़ताल की जाय तो इसके अंतर्गत कई मत प्रचलित हैं जिनमें शिवदान सिंह चौहान 'घटना का इतिहास, उसका परिवेश तथा उसके कारण और समन्वित प्रभाव को उसका तत्व होते हैं तो वहीं 'ओमप्रकाश सिंह है सामयिकता, प्रमाणिक प्रस्तुतीकरण, हार्दिकता, कथात्मकता, युगबोध तथा चित्रात्मकता को इसका तत्व मानते हैं। साथ ही रिपोर्ताज पर सर्वप्रथम शोध करने वाले डॉक्टर वीरपाल वर्मा- यथातथ्यता, जीवंतता, नाटकीयता, मर्मस्पर्शिता, एकेयता, कलात्मकता, रसात्मकता आदि को रिपोर्ताज के नियामक तत्व के रूप में स्वीकार करते हैं इस प्रकार यदि समन्वित रूप में देखा जाए तो रिपोर्ताज में जहां एक ओर रिपोर्ट के समसामयिकता, यथार्थता, तथ्य संकलन एवं घटना वर्णन जैसे गुण होते हैं तो वहीं दूसरी ओर साहित्यात्मकता होने के कारण तथा कथात्मकता, चित्रात्मकता, मर्मस्पर्शिता, जीवनन्तता, एवं मानवीय मूल्यों के साथ-साथ नवजीवन की आशा भी निहित होती है इस रुप में संबंधित तीनों रचनाओं को रिपोर्ट और साहित्यिकता दोनों के

तत्वों के आधार पर अलग अलग परीक्षण करेंगे।

जहां तक रिपोर्टिंग तत्वों का प्रश्न है तो सर्वप्रथम इसके लिए समसामयिकता तथा यथार्थता का होना आवश्यक है अर्थात आंखों देखी घटना का वर्णन हो तथा लेखक घटना का भोक्ता अथवा द्रष्टा हो। 'डॉ. रामविलास शर्मा' के शब्दों में कहें तो कल्पना के सहारे रिपोर्ताज नहीं लिखा जा सकता।' [6] इस रुप में इन तत्वों को संबंधित रचना में बखूबी देखा जा सकता है। जैसा की 'निर्धनता' के आरंभ में ही कहा गया है कि इसके लेखक माधवानुज स्वयं दलितोद्धार कार्यक्रम से जुड़े हैं और गांव गांव जाकर लोगों को चरखे के माध्यम से स्वावलंबी बनने का प्रचार कर रहे हैं। आंखों देखी घटना या घटना के भोक्ता व दृष्टा के रूप में तीनों रचनाओं के निम्न उदाहरण को देखा जा सकता है।

1. "घलते-चलते हम नदी के किनारे पहुंचे..... वहां पर बुड्ढे थे, बुढियाँ थीं, जवान थे लड़के थे और लड़कियां थीं।"- 'निर्धनता'
2. बुड्ढे थोड़ी देर तक शंका भरी नजर से हमारी ओर ताकते रहे..... पांड्या जी ने हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया कोटवालिए भोंचक होकर खड़े रहे मानो वे यह सब बातें समझ ही न सकते हो वे तो पांडया जी की आंख देख रहे थे।' [8]
3. अब कहीं दूसरी और चलना चाहिए। हम बेडती से दूर निकल आए और ठेठ बरताड़ में जा पहुंचे। इस गांव में कालीपरज की एक बस्ती है।' [9] -गोमती

उपरोक्त उदाहरणों के अतिरिक्त कई अन्य उदाहरण भी है जिनमें इन तत्वों की पहचान की जा सकती है परंतु इन उदाहरणों को देखकर रांगेय राघव (" हम पगडंडियों से बढ़ते जा रहे थे। सूर्य आकाश में चढ़ने लगा था।..... वही है सिद्धराजगंज देख रहे हो ना वह ताड़ का पेड़।') [10] और रेणु (हमारी गाड़ी नवादा छोड़कर कौवाकोल की ओर आगे बढ़ रही थी और मेरी स्मृतियां मुझे तेज गति से पीछे की ओर लेकर भागी जा रही थी।') [11] की याद आना स्वाभाविक है जो इसी प्रकार घटना की जीवंत रिपोर्टिंग करते हैं ।

वहीं रिपोर्टिंग के अगले तत्व के रूप में तथ्य संकलन एवं घटना वर्णन की तलाश करें तो निम्न संदर्भों को देखा जा सकता है

1. वह मैले थे, गंदे थे, आंगन मैला था । झोपड़ी का दरवाजा टूट गया था।..... लड़के नंगे थे .....इतनी छोटी झोपड़ी में ही इतने अधिक प्राणी बताइए प्राणी? भला ये खाते क्या होंगे?' [12] -निर्धनता
2. वह हाथ उन्होंने आज पहले-पहल ब्राह्मण के हाथों में देकर अपने को पावन बना समझा। ब्राह्मण ने भी अपने को पावन हुआ समझा' [13] - निर्धनता

सबसे गरीब का दर्शन करने हम निकले थे और भगवान ने दिलाया।.....एक गरीब की झोपड़ी से होकर हम निकले। झोपड़ी के बाहर एक स्त्री अपने कई बच्चों को लिए आज ताप्ती थी। क्यों बहन क्या खाया..... दाल भात तो ।' [14] - सात जनों में दो सेर धान'

उपरोक्त के अलावा साक्षात्कार व संवाद की शैली भी (यथा- एक ने पूछा- ये नदी के किनारे क्यों रहते हो और इतने मेले क्यों हैं। चुन्नी भाई- इनकी गरीबी।') [15] भी इन रचनाओं में रिपोर्टिंग तत्व की सुनिश्चितता को पूर्ण करती है।

साहित्यिकता के अंतर्गत संवेदना के तत्वों के रूप में कथात्मकता, चित्रात्मकता, मर्मस्पर्शिता, मानवीय मूल्य व नवजीवन की आशा आदि की तलाश में निम्न उदाहरणों को देखा जा सकता है-

1. कथात्मकता-

"बातचीत चली पहले सूप से काफी पैसे मिलते थे,

क्योंकि जंगलों में बांस मुफ्त का मिलता था। अब तो उसका पैसा देना पड़ता है। गांव में माल बेचने जाकर सब बिकता नहीं तो उसे कौड़ी के मोल बेचकर आना पड़ता है।" [16] - निर्धनता

2. चित्रात्मकता-

"अंदर उजाला हुआ। एक रोगी आदमी भीतर नंगे बदन, घुटनों में सिर लगाकर फटी चटाई पर पड़ा हुआ था। पास चूल्हे से भुभल तप रही थी और उसके बदन पर ज्वर अंगारे बरसा रहा था। बगल में उसकी घरवाली गोमती बैठी हुई थी" [17] - गोमती

3. मर्मस्पर्शिता

- " दीया नहीं जलाती हो?"/ "दिए का तेल कहां से लाऊं?"/ .....आज क्या खाया?"/ जहां तहां खा लिया/..... कल क्या खाओगी, कोई प्रभाव नहीं चार-पांच दिन चलने लायक ज्वार ही अभी बाडे में है।" [18]- गोमती
- "सवेरे क्या खाया?"/ " वही दाल भात तो"/ तब अभी?"/ वह तो सवेरे का बचा हुआ था"/ सवेरे कितना राँधा था?/ "दो सेर"/ दो सेर में इसने भी खाया, इसके सात लड़कों ने भी खाया और बचा कर रात का भी काम चलाया।" [19] - 'सात जनों में दो सेर धन'

कलात्मकता

"वह आप खिल-खिल हंसती थी। हमे लगा मानो उसकी हंसी से ही वह झोपड़ी ठहरी हुई थी"। [20] - गोमती

उदाहरण के साथ साथ अगर हम इसकी व्याख्या करें तो संपूर्ण रिपोर्टिंग को कथात्मक शैली एवं साक्षात्कार की शैली प्रस्तुत किया गया है। जिसमें कथात्मकता के अंतर्गत चरित्र चित्रण एवं काल्पनिकता का सर्वथा अभाव है कथात्मकता केवल घटना विवरण के रूप में कथ्य को रोचक एवं आगे बढ़ाने का एक उपकरण मात्र ही है इसी कारण कथ्य कथा न होकर कथेतर है जबकि साक्षात्कार शैली का मिश्रण इसकी प्रभावोत्पादकता एवं लालित्य को कई गुना बढ़ाते हुए प्रेषणीयता, सहजता, समसामयिकता के अतिरिक्त कथ्य को एक सहज प्रवाह प्रदान करता है जहां एक चित्रात्मकता की बात है तो इसके पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि यह औपनिवेशिक परिवेश है जहां एक तरफ देश का आर्थिक शोषण हो रहा है तो दूसरी तरफ सामंतवादी मानसिकता के कारण सामाजिक शोषण भी अपने चरम पर है (जिससे परितः गरीबी, भुखमरी, अश्पृश्यता, बेरोजगारी, महामारी, वंचना, शोषण आदि का माहौल व्याप्त है।) ऐसे परिवेश में लोगों को स्वतंत्रता, समानता, अधिकार जैसे राजनैतिक मूल्यों के साथ-साथ अछूतोद्धार, सहयोग, भाईचारा, स्वावलंबन जैसे सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों के प्रति जागृत एवं तैयार करना ना केवल देश के लिए बल्कि समाज के लिए भी एक अपरिहार्य कदम था, और एक साहित्यिक रिपोर्टिंग के रूप में यह रचना बारदोली प्रदेश में कालीपरज जाति की निम्न जीविकोपार्जन स्थिति, जोखिम भरे कार्य, असंगठित व मलिन काम, हीनग्रस्तता, भुखमरी, बेरोजगारी, स्त्रियों की सामाजिक व आर्थिक दशा, चिकित्सकीय सुविधाओं का अभाव, महामारी/बीमारी, उच्च वर्ग का शोषण, कुपोषण आदि विषमता एवं विसंगतिपरक स्थितियों की मूर्तिमान तस्वीर प्रस्तुत करता है जो पाठक की संवेदना को जागृत कर उसके अंतर्मन को ठीक वैसे ही झकझोरती है जैसे अकाल पर लिखे गए रांगेय राघव, रेणु व मणि मधुकर के रिपोर्ताज इस रुप में इन रिपोर्तारजो को इसके स्वाभाविक विकास के रूप में भी देखा जा सकता है। इसी क्रम में जहाँ एक मार्मिकता एवं मानवीय मूल्यों की बात है तो पूर्ववर्ती उदाहरण में इसे भी पूर्णरूपेण देखा जा सकता है परंतु साथ ही गोमती द्वारा खाने की परवाह न करना पशु योग्य अनाज को खाने के

लिए विवश होना वही तीसरी रचना में दो सेर अनाज में दो वक्त 15 लोगों का खाना, बड़े-बड़े भू स्वामियों द्वारा मजदूरों की धरपकड़ कराकर बेगारी कराना, एवं उनके जुल्म से त्रस्त होकर गांव छोड़ने पर मजबूर होना आदि उदाहरण ना केवल मर्मस्पर्शिता को प्रकट करते हैं बल्कि तत्कालीन समाज में गहरे स्तर पर मानवीय मूल्यों की पड़ताल भी करते हैं (इसका बड़ा प्रमाण इन रचनाओं के शीर्षक है) लेकिन ऐसी परिस्थिति के बाद भी गोमती व अन्य के द्वारा हंसकर वंचना के स्थान पर स्वाभिमान प्रकट करना एवं गांधीवादियों द्वारा लोगों को स्वावलंबन के लिए चरखे द्वारा प्रेरित करना नवजीवन की आशा एवं संघर्षशीलता को प्रकट करता है जो कि एक रिपोर्ताज का केंद्रीय तत्व है। अतः उपरोक्त तात्विक विश्लेषण के बाद इस रचना को रिपोर्ताज कहने में किसी भी प्रकार दुविधा नहीं रह जाती है।

विधागत लक्षण के पश्चात यदि हम रिपोर्ताज परंपरा की पुनर्व्याख्या के अंतर्गत प्रथम रिपोर्ताज की चर्चा करें उससे पहले हमें यह समझना होगा कि किसी विधा की प्रथम रचना का संबंध उस विधा के उद्भव से होता है और किसी भी नवीन विधा का उद्भव युगीन परिस्थितियों की देन होता है। और उपरोक्त सभी बातें रिपोर्ताज पर भी लागू होती है और जैसा कि पहले ही बात की जा चुकी है कि यह एक फ्रांसीसी शब्द है और इसका उद्भव द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुआ और इसी को आधार मानकर डॉ. नगेंद्र, रामचंद्र तिवारी, ओमप्रकाश सिंहल जैसे विद्वान 'रूपाभ के दिसंबर 1938' में छपी लक्ष्मीपुरा को रिपोर्ताज की प्रथम रचना मानते हैं । परंतु यहां उत्पन्न भ्रम कुछ और नहीं बल्कि उसी मानसिकता परिणाम है जिसके अंतर्गत सदैव से आलोचक अथवा साहित्य इतिहासकार विद्वान हिंदी विधाओं के आंदोलन को विदेशी खासकर यूरोपीय साहित्यिक आंदोलन की परंपरा का विकास मानते रहे हैं। "कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के शब्दों में कहें तो" कुछ लोग कहते हैं कि पत्रकार कला में रिपोर्ताज का आविष्कार रूस में हुआ और वही से भारत में आया निश्चय ही यह उस देश में अपने स्वतंत्र रूप में पनपा होगा, हिंदी को उसका श्रेय लेने की आवश्यकता नहीं, हिंदी में यह स्वतंत्र रूप में पनपा है उस पर किसी का किसी तरह का भी ऋण नहीं है। हां बाद में इस विधा के लिए रिपोर्ताज नाम इसी के माध्यम से हिंदी ने ले लिया यह एक प्रत्यक्ष सच्चाई है। साथ ही लेखक द्वारा स्वयं यह स्वीकार किया जाना कि वह 1925 से रिपोर्ताज लेखन कर रहे हैं बावजूद इसके परंपरा की शुरुआत 1938 से मानना अनुकरणशील मानसिकता का परिणाम नहीं है तो क्या है । हमें सर्वप्रथम यह समझना चाहिए कि अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्र की युगीन परिस्थितियां एक ही काल में ही अलग अलग होती है इसका प्रमुख कारण प्रत्येक क्षेत्र का अपना मौलिक जाति, वातावरण एवं क्षण का होना है इस कारण प्रत्येक क्षेत्र में नवीन भावनाओं की सफल अभिव्यक्ति से उत्पन्न नवीन विधाओं का स्वरूप मौलिक होता है ना कि किसी दूसरे क्षेत्र की विधा परंपरा का विकास। इस क्रम में यह संभव है कि अलग-अलग क्षेत्र में उसे अलग अलग नाम दिए गए हो और बाद में सभी के लिए एक नाम को सर्वमान्य मान लिया गया हो परंतु इसके अंतर्गत यह बिल्कुल उचित नहीं है की विधागत क्षेत्रीय मौलिकता के स्थान पर उस पर दूसरे क्षेत्र के परंपरागत चरण विकास को थोपा जाए। इस रूप में पत्रकारिता के साथ-साथ व्यंग एवं उत्कृष्ट कलात्मकता का मिश्रण कर लिखे गए भारतेंदु के "दिल्ली दरबार दर्पण" कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के आरंभिक रिपोर्ताज या संबंधित इन तीन रचनाओं को रिपोर्ताज की प्रथम या आरंभिक रचना के रूप में पुनर्विचार करने की आवश्यकता

है। परंतु यहां एक तथ्य आवश्य दृष्टया है कि भारतेन्दु अथवा कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर द्वारा लिखी गई रचनाएं यात्रा विवरण अधिक और घटना विवरण कम है इस रूप की इन रचनाओं को प्रथम प्रौढ़ रिपोर्ताज अवश्य कहा जा सकता है क्योंकि इन में योग इन परिस्थितियों के चित्रण के साथ साथ आगे रांगेय राघव और रेणु जैसे रिपोर्ताजकारों के यहां लिखे गए रिपोर्तारजों का स्रोत मिलता है।

संदर्भ - परिचय

संदर्भ संख्या	पृष्ठ संख्या	ग्रंथ
1.	85	अनुसंधान प्रविधि सिद्धान्त औरप्रक्रिया
2.	106	चाँद अछूत अंक
3.	7	क्षण बोले कण मुस्काये
4.	11	रेणु के रिपोर्ताज
5.	भूमिका	तूफ़ानों के बीच
6.	146	कथा विवेचना एवं गद्य शिल्प
7.	106	चाँद अछूत अंक
8.	107	वही
9.	108	वही
10.	36	तूफ़ानों के बीच
11.	176	रेणु रचनावली *-4*
12.	106	चाँद अछूत अंक
13.	107	वही
14.	108	वही
15.	106	वही
16.	107	वही
17.	107	वही
18.	108	वही
19.	108	वही
20.	106-07	वही

आधार/संदर्भ ग्रंथ

1. चाँद अछूत अंक - सं. पं. नंदकिशोर तिवारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, तृतीय आवृत्ति, 2011.
2. क्षण बोले कण मुस्काये - कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय ज्ञानपीठ, पांचवां संस्करण, 2003.
3. तूफ़ानों के बीच - रांगेय राघव, राधाकृष्ण पेपरबैक, पहला संस्करण, 2012.
4. रेणु रचनावली- 4- सं. भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1995.
5. सहित्यानुशीलन - शिवदानसिंह चौहान, आत्माराम एन्ड संस संस्करण, 1995.
6. अनुसंधान प्रविधि सिद्धान्त और प्रक्रिया - एस.इन. गणेशन
7. कथा विवेचना और गद्य शिल्प, - रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 1999.
8. गद्य की नई दिशायें - ओमप्रकाश सिंघल, पीताम्बर पब्लिशिंग कंपनी, प्रथम संस्करण, 1981.
9. फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोर्ताज - भारत यायावर, ए.पी.एन पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण, 2015.
10. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र, मयूर पेपरबैक, 33वां संस्करण, 2010.
11. हिंदी का गद्य साहित्य - डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्विद्यालय प्रकाशन, नौवां संस्करण, 2014.
12. हिन्दी गद्य विन्यास और विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, 2008.
13. हिंदी रिपोर्ताज - डॉ. वीरपाल वर्मा, कुसुम प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1987.